❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त राष्ट्र एवं देशवासियों को
76वें गणतन्त्र दिवस
हार्दिक शुभकामनाएं

वर्ष 48, अंक 13 | एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 20 जनवरी, 2025 से रविवार 26 जनवरी, 2025
विक्रमी सम्वत् 2081 | सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 | पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये | दूरभाष: 23360150
ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 1 फरवरी से 9 फरवरी, 2025

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं आर्य समाज के वैदिक साहित्य का होगा धुआंधार प्रचार

आओ ! सत्यार्थ प्रकाश एवं वैदिक साहित्य के प्रचार-प्रसार यज्ञ में अपनी आहुति दें

स्टाल उद्घाटन
1 फरवरी, 2025
प्रातः 11:30 बजे

आप द्वारा प्रदान की गई एक आहुति भी ला सकती है किसी के जीवन में परिवर्तन

हॉल नं. 2-3 स्टाल नं. N 05

मेला समापन
9 फरवरी, 2025
रात्रि 8 बजे

संस्कृत साहित्य के एक श्लोक का भावार्थ है कि रात्रि में कमल की पंखुड़ियों में बंद होकर भंवरा प्रभात होने का सपना देख रहा है। रात्रि बीतेगी, सुप्रभात होगा, सूर्य की किरणें धरती पर बिखरेंगी और फूल खिल उठेगा, इस तरह कल्पना के लोक में भंवरा विचरण कर रहा था कि एक मदमस्त हाथी ने उस कमल के फूल सहित पौधे को ही अपने पैरों तले कुचल दिया। कमल की कोमल पत्तियों के बीच कैद होकर सपना देखने

- शेष पृष्ठ 4 एवं 7 पर

"दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित सेवा प्रकल्पों में वैदिक साहित्य के प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार का अपना विशेष स्थान है। पिछले 20 वर्षों से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित होने वाले पुस्तक मेलों में सभा द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी कृत समस्त साहित्य (विशेष रूप से सत्यार्थ प्रकाश) एवं आर्य समाज के विद्वानों, संन्यासियों द्वारा निर्मित पुस्तकों के प्रचार प्रसार का अभियान लगातार गतिशील है। इसके लिए सभा भारत के विभिन्न राज्यों में और विशेष रूप से दिल्ली में आयोजित होने वाले वार्षिक मेले में बृहद पुस्तकों का स्टाल लगाती आ रही हैं। ..... गत वर्षों के भांति इस वर्ष भी नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आर्य समाज का बड़ा स्टाल 1 से 9 फरवरी 2025 के मध्य आयोजित होने वाले विश्व पुस्तक मेले में लगेगा, इस अवसर पर सत्यार्थ प्रकाश को विशेष छूट के साथ वितरित किया जाएगा, जिसमें अनेक लोग अपना सहयोग प्रदान करेंगे, आर्य समाज के स्टॉल पर सभी आर्यजन अपने परिवार सहित पहुंचेंगे और इस अवसर पर वैदिक विद्वानों द्वारा शंका समाधान का विशेष क्रम भी आयोजित होगा। महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती और आर्य समाज के 150 वें स्थापना वर्ष के 2 वर्षीय आयोजनों के मध्य यह दूसरा विश्व पुस्तक मेला है। इस अवसर पर आर्य समाज के वैदिक साहित्य का प्रचार प्रसार धूमधाम से किया जाएगा, हर्षोल्लास से किया जाएगा, उमंग उत्साह के साथ किया जाएगा। तो आप सभी आर्यजन इन तिथियों को नोट कर लें और सहयोगी के रूप में, कार्यकर्ता के रूप में या दानदाता के रूप में इस अवसर पर अपना अतुलनीय सहयोग अवश्य दें। जिससे महर्षि दयानंद सरस्वती जी की शिक्षाओं को, आर्य समाज के वैदिक सिद्धांतों को, मान्यताओं को और परंपराओं को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। आर्य समाज का 150वां स्थापना वर्ष तथा महर्षि दयानंद सरस्वती जी का 200वां जयंती वर्ष मनाना सार्थक हो सके। - विनय आर्य, महामन्त्री

सत्यार्थ प्रकाश केवल मात्र 20/- रुपये में देने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करें

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमूल्य ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' आप द्वारा प्रदान की गई सब्सिडी (छूट) के साथ जनसाधारण को मात्र 20 रुपये में उपलब्ध कराया जाएगा। अतः सभी पाठकों, आर्यजनों, दानी महानुभावों, आर्यसमाजों/सभाओं एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि सत्यार्थ प्रकाश की अधिकाधिक प्रतियां 20/- में उपलब्ध कराने हेत 30/- रुपये प्रति की दर से सब्सिडी (छूट) सहयोग प्रदान करें। आप अपना सहयोग 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर द्वारा भेजकर अथवा निम्नांकित बैंक खाते में सीधे जमा करके अथवा दिया गया क्यू.आर. कोड स्कैन करके भी दे सकते हैं।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 1098101000777 केनरा बैंक, IFSC - CNRB0001098 MICR - 110015025

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद प्राप्त कर लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में
ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति के सहयोग से
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा

आर्यसमाज का 150वाँ स्थापना दिवस समारोह

29-30 मार्च, 2025 (शनि-रविवार) : सिडको कन्वैंशन सैन्टर, वाशी, नई मुम्बई

विशेष अनुरोध

★ समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों से निवेदन है कि उपरोक्त तिथियों में अपना कोई बड़ा आयोजन न रखें।

★ अपने साप्ताहिक सत्संगों में समारोह की सूचना अवश्य दें और सपरिवार पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करें।

★ इस ऐतिहासिक समारोह में समस्त आर्यसमाजों, प्रान्तीय सभाओं, आर्य संगठनों के अधिकारी, संन्यासी, विद्वान एवं सदस्य तथा कार्यकर्ता अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

★ आपकी आर्यसमाज/संस्था की ओर से जो महानुभाव समारोह में सम्मिलित होना चाहते हैं, कृपया उनके नाम, पते एवं मोबाइल नं. की सूची प्रान्तीय सभा के माध्यम से प्रेषित करें, ताकि तदनुसार व्यवस्थाएं की जा सकें।

28 मार्च को मुम्बई पहुंचने के हिसाब से अपनी रेल टिकटें आरक्षित करवाएं। 27 जनवरी से रेल टिकटों की बुकिंग कराई जा सकेगी।

निवेदक :- ★ ज्ञान ज्योति पर्व महोत्सव आयोजन समिति ★ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली ★ आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई

साप्ताहिक
आर्य सन्देश
20 जनवरी, 2025 से 26 जनवरी, 2025

देववाणी-संस्कृत

परमात्मा हमारा और हम परमात्मा के प्यारे के जाएँ

वेद-स्वाध्याय

प्रियो नो अस्तु विश्पतिर्होता मन्द्रो वरेण्यः। प्रियाः स्वग्नयो वयम्।।
-ऋ० 1।26।7; सा० ऊ 8।1।1
ऋषिः- आजीगर्तिः शुनःशेपः।। देवता-अग्नि ।। छन्दः- गायत्री।।

शब्दार्थ- वह **विश्पतिः** = हम प्रजाओं का स्वामी **मन्द्रः** = आनन्द देने वाला **वरेण्यः** और वरणीय **होता** =दाता अग्नि **नः** हमें **प्रियः अस्तु** = प्यारा हो जाए तथा **वयम्** = हम भी **स्वग्नयः** = उत्तम अग्नियोंवाले होकर **प्रियाः** = उसके प्यारे हो जाएँ।

विनय- हे मनुष्य भाइयो! हम अपने परम आत्मा को, परम अग्नि को भूल गये हैं। हम यह भी भूल गये हैं कि हम स्वयं भी वास्तव में आत्मा-रूप हैं, आत्माग्नि हैं, आत्माग्नि हैं। इसीलिए हम इस संसार की परम तुच्छ धन-सम्पत्ति, पुत्र, वधू, सुख-आराम, शरीर तथा सौन्दर्य आदि विनश्वर वस्तुओं से इतना प्रेम करने लग गये हैं, इनमें इतने आसक्त, लिप्त और अनुरक्त हो गये हैं कि हमें इस गन्दी दलदल में से अब ऊपर उठना असम्भव सा हो गया है, परन्तु जो हमारा असली स्वामी, सखा और सब-कुछ है, परम पवित्र प्रभु है, उसे हम दिन-रात के चोबीसों घण्टों में से कुछ क्षणों के लिए भी स्मरण नहीं करते। अब तो हम होश सँभाले, जागें और अपने परम प्यारे अग्नि-प्रभु को अपना लें। वही हम तब प्रजाओं का एकमात्र पति है, स्वामी है, वही हमें सब सुखों का देनेवाला 'मन्द्र' है, वही एकमात्र है जो हम सबका वरणीय है और वही है जो अपने परम यज्ञ द्वारा हम प्रजाओं को सब कुछ दे रहा है। अरे प्यारो! हम उसे छोड़कर कहाँ प्रेम करने लगे? सचमुच हमने अपनी प्रेमशक्ति का अभी तक घोर दुरूपयोग किया है। क्या प्रेम-जैसी पवित्र वस्तु हमें इन अशुचि तुच्छ, अनित्य वस्तुओ में रखने के लिए ही दी गई थी? आओ, अब तो हम अपने प्रेम के लक्ष्य को पा लें और उस मन्द्र 'विश्पति' को, वरेण्य 'होता' को अपना प्यारा बना ले, अपना प्रेम उसे समर्पण कर दें।

किन्तु इस प्रकार प्रेमपथ पर चल देने पर हे भाइयो! हमें भी उसे रिझाना होगा, उसे प्रसन्न करना होगा, उसके प्रेम को अपने प्रति आकर्षित करना होगा, अर्थात् हमें भी उसका प्यारा बनना होगा; और उसके प्यारे तो हम तभी बन सकते हैं जब हम ''स्वग्नि'' बन जाएँ, उत्तम प्रकार की आत्माएँ बन जाएँ, अतः आओ, हम सब मनुष्य अपने उस परम प्यारे के लिए अपनी आत्माओं को शुद्ध करें। उस बृहद् अग्नि के लिए अपनी अग्नियों को उत्तम प्रकार की बना लेवें। अब हमारी आत्माग्नि से विश्वप्रेम की सुन्दर किरणें ही प्रसारित होवें, हमारी बुद्धि-अग्नि में से सत्य ज्योति ही निकले, हमारी मानसिक अग्नि सर्व कल्याण के उत्तम विचारों में ही प्रकाशित हुआ करे और हमारी चित्ताग्नि से पवित्र इन्छाएँ व भावनाएँ ही उठें। इस प्रकार हम उत्तम अग्निवाले हो जाएँ, क्योंकि इसी प्रकार वह हमारा प्यारा हमसे प्रसन्न होगा। इसी प्रकार हमें अपने प्यारे की रिझाना है।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शन - अत्यंत आवश्यक

कल बच्चे वोक्स न बनें इसलिए हम पुस्तक मेला अवश्य जाएं

1 से 9 फरवरी 2025 तक भारत मंडपम, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला आयोजित हो रहा है, एक बार फिर आर्य समाज इस पुस्तक मेले में अपनी महान वैदिक सभ्यता का पहरेदार बनकर जाएगा। आप अपने बच्चों के साथ जरूर आंए यहाँ आपको वेद, सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक पुस्तकें, इतिहास, भारत की संस्कृति को जानने-समझने के बहुत ग्रंथ आपको यहाँ मिलेंगे। जिनमें आपके बच्चों को उन सभी सवालों के जवाब मिलेंगे जो वोक्स उनसे पूछकर उन्हें नए-नए वोक्स बनाते हैं। समझिए, आपके आस-पास दाएं-बाएं वोक्स खड़े हैं, जो मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को वोक्स बना रहे हैं। इनसे बचना है, तो वैदिक साहित्य ही एक मात्र इलाज है।

एक कहावत है कि किसी भी राष्ट्र की संस्कृति तब तक गूंगी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती। और जब किसी राष्ट्र की संस्कृति बदल दी जाए तो समूचा राष्ट्र और समाज धराशाई हो जाता है। सुनने में यह सब एक बौद्धिक विचार लग सकता है, किंतु दुनिया भर के विद्वान अब एक नए खतरे से आगाह कर रहे हैं और जिस खतरे से ये लोग आगाह कर रहे हैं, वह कोई विश्वयुद्ध नहीं, बल्कि यह खतरा है मस्तिष्क को अचेत करने वाले शांत जहर का या कहें एक अजीब सी किस्म की ड्रग जो एक देश से दूसरे देश में मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से भेजी जा रही है। इस ड्रग का नाम है वोकिज्म। और यह वोकिज्म नाम की ड्रग पिछले कुछ सालों से भारत में भी धड़ल्ले से युवाओं को परोसी जा रही है और उन्हें वोक्स बनाया जा रहा है।

इस नए अनुशासनहीन कल्चर को वोकिज्म कहा जा रहा है, जैसे पिछले दिनों भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व खिलाड़ी और बैटिंग कोच संजय बांगर के बेटे आर्यन बांगर ने अपना जेंडर बदल लिया है। अब वह आर्यन से अनाया बांगर बन गए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर अपनी ट्रांसफॉर्मेशन जर्नी शेयर करते हुए बताया है कि उन्होंने हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी कराई । अब 10 महीने बाद वह लड़के से लड़की बन गए।

केवल इतना भर नहीं, इसमें हवन से फेफड़ों को नुकसान, ध्यान साधना को ढोंग, धार्मिक ग्रंथों का मजाक मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से बनाया जा रहा है। साथ ही लैंगिक समानता के नाम पर आधुनिक कपटी नारीवाद, सेक्स फ्री कल्चर, बच्चा पैदा मत करो ऐसी सलाह देने वाले, शादी को बेकार और दमघोटू संस्था बताने वाले लोग खुद को वोक्स कहते हैं। जीवन में अपनी असफलताओं के लिए दूसरों को दोषी ठहराने और मुफ्त संसाधन प्राप्त करने का प्रयास करने वाले ये लोग बड़ी तेजी से फैल रहे हैं।

सबसे पहले अमेरिका और यूरोप में ये लोग बड़ी तेजी से सक्रिय हुए और खुद को अहिंसक, धर्मनिरपेक्ष और यहां तक कि दयालु बताकर धर्मांतरण तक करने लगे। ऑस्ट्रेलिया में राजनेताओं का मजाक बनाया जाने लगा। भारत में हिंदू बड़ा धर्म है तो धर्म को शोषक गरीबों का उत्पीड़न करने वाला कहा जाने लगा। ब्रिटेन में मध्यम वर्ग, मध्यम आयु वर्ग की गोरी लड़कियों और महिलाओं को ब्रेनवाश किया जाने लगा।

पश्चिम और तीसरी दुनिया में तबाही मचाने वाली यह कपटी विचारधारा बड़ी तेजी से फैल रही है। भारत में भी देखा जाए तो लेफ्टिस्टों का वोकिज्म भारतीय संस्कृति परंपरा को पूरी तरह मिटाने की कोशिश में है। आप ध्यान से देखिए, ये लोग समलैंगिकता के समर्थन में सड़कों पर उतरते हैं। तो कभी गे अधिकारों को लेकर, कभी लिव-इन रिलेशनशिप के तो कभी एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर को लेकर। और तो और, अभी एक नए आंदोलन को इन लोगों ने जन्म दिया जिसका नाम है एक्सचेंज ऑफ फीमेल पार्टनर्स, यानी एक-दूसरे के साथ अपनी पत्नियों की अदला-बदली। केवल सामाजिक ढांचा ही इनके निशाने पर नहीं है, बल्कि धार्मिक रूप से भी ये लोग कभी मनुस्मृति पर, कभी रामचरितमानस पर, कभी वेद और उपनिषद पर हमला करते दिख जाते हैं। बाबाओं के रूप में, मोटिवेशन स्पीकर के रूप में, कोचिंग क्लास के टीचर के रूप में, स्टैंडअप कॉमेडियन के रूप में, फिल्म स्टार या फिर राजनेता के रूप में ये लोग अपना काम कर रहे हैं। भले ही वोकिज्म भारत में नया-नया है, लेकिन अमेरिका को खोखला कर चुका है। पूरा अमेरिका सांस्कृतिक तौर पर ढहने की कगार पर है। अमेरिका के बाद अब यह यूरोपीय देशों में भी अपनी जगह बना रहे हैं। यह वामपंथ का नया चेहरा है, जहाँ रिलिजन और देश प्रेम के लिए कोई स्थान नहीं।

जब ये लोग जान गए कि क्रांति बंदूक से संभव नहीं, तब इन्होंने अपना रूप बदल लिया और हथियार बनाया सामाजिक न्याय को, महिला अधिकारों को, बेरोजगार युवाओं को, युवा लड़कियों को, गरीब को, पर्यावरण को, समलैंगिक बीमार लोगों को। यानी इनका लक्ष्य है संस्कृति, समाज और युवा। वोकिज्म के मुख्य रूप से चार पिलर हैं- पहला व्यक्तिवाद, दूसरा फ्री सेक्स, तीसरा विकृत नारीवाद और चौथा ट्रांसजेंडरवाद।

व्यक्तिवाद के मामले में ये कहते हैं कि रेस, जाति, रिलिजन ये सब परिवार से मिलते हैं। यदि तुम इनसे दूर रहना चाहते हो तो परिवार को छोड़ दो। अपनी पारिवारिक पहचान मिटा दो क्योंकि ये तुम्हें परिवार से मिलते हैं। तुम्हारा शरीर, तुम्हारी इच्छाएं तुम्हारी हैं, तुम वह करो जो तुम्हारा मन करता है। यहाँ ये माता-पिता को शोषक और बच्चों को शोषित सिद्ध करने का प्रयास करते हैं। फिर ये कहते हैं फ्री सेक्स में बुराई क्या है, जब जो तुम्हें अच्छा लगता है उसके साथ रहो। शादी भी मन हो तो करो, नहीं तो मत करो, क्यों बंधन में बंधना? जीवन मौज-मस्ती के लिए है, क्यों एक जगह टिकना और क्यों बच्चों का बोझ उठाना? इनकी नजर में समाज शोषक है और रीति-रिवाज पिछड़ेपन की निशानी। ऐसे ही इनका नारीवाद भी विकृत रूप में सामने आता है। यहाँ इनका कहना है कि एक स्त्री परिवार में कभी खुश रह ही नहीं सकती। संयुक्त परिवार में तो बिल्कुल नहीं। सारी जिम्मेदारियां महिला पर ही लाद दी जाती हैं। वह अपना करियर नहीं बना पाती। पूरी उम्र बच्चे पालती है, घर के काम करती है। वह एकल परिवार में है तो कहते हैं पति शोषक है और शादी वेश्यावृत्ति का लाइसेंस। इतना भर नहीं, ये कहते हैं लड़का-लड़की बायोलॉजिकल रूप से अलग-अलग नहीं हैं। बच्चे को जेंडर उसके माता-पिता और डॉक्टर पैदा होने के समय देते हैं। इनके अनुसार जेंडर एक सांस्कृतिक ठेका है। - **शेष पृष्ठ 7 पर**

बाल बोध

मन की एकाग्रता के लिए आवश्यक है - ध्यान

प्राचीनकाल में बालक एवं बालिकाओं को शिक्षक ध्यान योग की पद्धति सिखाते थे। उनका रहन-सहन सात्विक एवं आध्यात्मिक होता था। बच्चे प्रातः काल प्रभु का ध्यान एवं सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय रुचि लेकर करते थे। रात्रि में शयन से पूर्व आत्मचिंतन, आत्म अवलोकन उनकी दैनिक चर्या का अनिवार्य अंग होता था।

आधुनिक परिवेश में अध्यापक-अध्यापिकाएं स्वयं ध्यान-योग से कोसों दूर हैं। उन्हें खुद को जप-तप, स्वाध्याय सयंम और ध्यान-साधना से कुछ लेना-देना नहीं है तो क्या वे बच्चों को इस गहन विषय का ज्ञान देंगे? वे तो केवल पाठ्यक्रम की पुस्तकों को माध्यम बनाकर अपनी ड्यूटी पूर्ण करते हैं। परिणाम स्वरूप आजकल बच्चों का उठना-बैठना, चलना-फिरना, खाना-पीना, सोना-जागना, पढ़ना-लिखना, बोलना- चालना, हंसना-खेलना, लड़ना-झगड़ना और अध्यापक-अध्यापिकाओं के प्रति व्यवहार करना कार्टूनों जैसा हो गया है।

वस्तुतः ध्यान एवं चिन्तन मस्तिष्क के विषय हैं। मस्तिष्क से ही ध्यान किया जाता है और मस्तिष्क से ही चिन्तन किया जाता है। ध्यान एवं चिन्तन के लिए मस्तिष्क का निर्मल होना जरूरी है।

स्वाध्याय मस्तिष्क को भयरहित करके उसमें स्थिर मति और स्थित प्रज्ञा की स्थापना करता है। सत्संग अथवा ज्ञान महान पुरुषों की संगति से भी मस्तिष्क का निखार होता है। महान योगियों के उपदेश और प्रेरणा अज्ञान रूपी अंधकार को दूरकर विवेक शक्ति को जागृत करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मस्तिष्क निर्मल दर्पण बन जाता है। चिन्तनशील विद्यार्थी न तो कभी भयभीत होता है और न ही कभी किसी के समक्ष अपनी समस्याएं प्रस्तुत करता है। वह तो अपने चिन्तन द्वारा अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं जान लेता है। जब भी कोई प्रश्न तुम्हारे सामने अड़कर खड़ा हो जाए, उस समय एकान्त में निश्चल मन के साथ उस पर सुसंगत एवं गहन चिन्तन कीजिए। तुम्हें आश्चर्य होगा कि थोड़ी अवधि के उपरांत तुम्हें उसका समाधान मिल जाएगा।

स्कूलों, कालेजों में ध्यान-साधना शिविरों का आयोजन जरूर होना चाहिए। शिक्षकों को भी ध्यान-साधना की जानकारी होना जरूरी है। क्योंकि आजकल जो विद्या मन्दिरों में भ्रष्टाचार, अनाचार और अभद्र व्यवहार पनप रहा है उसके और अन्य अनेक कारण भी हो सकते हैं, लेकिन सबसे बड़ी वजह तो यह दिखाई देती है कि आध्यात्मिकता का अभाव हुआ है। ध्यान-साधना से बच्चों को जो लाभ होगा वह अतुलनीय है। उनकी एकाग्रता, जागरूकता और परीक्षाओं में सफलता की अधिकतम संभावना बढ़ जाएगी।

स्वस्थ और पवित्र विचारों से मस्तिष्क का परिष्कार तथा निखार होता है। अस्वस्थ और निराशाजनक विचार मस्तिष्क को रोगी बनाते हैं। अपवित्र विचार मस्तिष्क को जर्जरित कर देते हैं। वे पवित्र विचार ही हैं जो मस्तिष्क को सदा स्वस्थ रखते हैं। जीवन में आत्मचिन्तन और प्रभु का ध्यान मस्तिष्क को दिव्य बना देता है। आत्मचिन्तन से आत्मानुभूति होगी और प्रभु के ध्यान से तुम्हारे अन्दर दिव्यगुणों की स्थापना होगी। जो जिसका चिन्तन करता है उसमें उसी के अनुरूप गुणों का समावेश तथा उसमें उसी का साक्षात्कार होता है।

स्वाध्याय मस्तिष्क को भयरहित करके उसमें स्थिर मति और स्थित प्रज्ञा की स्थापना करता है। सत्संग अथवा ज्ञान महान पुरुषों की संगति से भी मस्तिष्क का निखार होता है। महान योगियों के उपदेश और प्रेरणा अज्ञानरूपी अंधकार को दूरकर विवेक शक्ति को जागृत करते हैं। जिसके परिणाम स्वरूप मस्तिष्क निर्मल दर्पण बन जाता है।

चिन्तनशील विद्यार्थी न तो कभी भयभीत होता है और न ही कभी किसी के समक्ष अपनी समस्याएं प्रस्तुत करता है। वह तो अपने चिन्तन द्वारा अपने प्रश्नों का उत्तर स्वयं जान लेता है। जब भी कोई प्रश्न तुम्हारे सामने अड़कर खड़ा हो जाए, उस समय एकान्त में निश्चल मन के साथ उस पर सुसंगत एवं गहन चिन्तन कीजिए। तुम्हें आश्चर्य होगा कि थोड़ी अवधि के उपरांत तुम्हें उसका समाधान मिल जाएगा।

ध्यान और चिन्तनशीलता का अभाव होने के कारण ही आजकल विद्यार्थी सर्वत्र अभद्र आन्दोलन तोड़-फोड़ के कार्य करते हैं। यदि चिन्तन का प्रयोग करें तो अपने परिवार, समाज, राष्ट्र को अनेक अनावश्यक परेशानियों से मुक्त करा सकते हैं। मस्तिष्क को शरीर में सबसे उपर इसीलिए बिठाया गया है कि प्रत्येक काम सदा चिन्तन करके ध्यान मग्न होकर पूर्ण करें।

-संपादक

परिवर्तन : आता नहीं है - लाया जाता है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत काल तक के भारतवर्ष का वैभव काल

गतांक से आगे -

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आने से पूर्व हम अपनी प्राचीनतम गौरवमयी सांस्कृतिक विरासत और अपने मूल इतिहास को पूरी तरह भुला चुके थे।

कोई सृष्टि का आरम्भ 2000 वर्ष पूर्व का मानता था तो को केवल 5000 वर्ष पूर्व। किन्तु महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ही ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखते हुए हमें तर्कपूर्ण तरीके से सिद्ध किया कि आधुनिक सृष्टि का आरम्भ 1 अरब 96 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ। मानव की उत्पत्ति तिब्बत में हुई। सृष्टि के आरम्भ में परमपिता परमात्मा ने मानवजाति पर कृपा करते हुए वेद का ज्ञान अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा आदि चार ऋषियों के माध्यम से प्रदान किया। ये 'वेद' ही मानव सभ्यता का मूल ज्ञान, मूल संविधान था, जिसके अनुसार मानव सृष्टि आगे बढ़ने लगी। धीरे-धीरे जब मनुष्यों की संख्या बढ़ने लगी तो नए स्थानों पर बसना आरम्भ हो गया। नए-नए शहर बसने लगे। समाज को संचालित करने लिए वेदज्ञान को विषयों के अनुसार समझाने के लिए अलग-अलग ऋषियों ने अनेक ग्रन्थों की रचना की, जिनमें मुख्य रूप से चार उपवेद हैं-

ऋग्वेद का उपवेद-
अर्थवेद (इकोनॉमिक्स अर्थशास्त्र, व्यापार आदि और इससे सम्बन्धित विषय।)

यजुर्वेद का उपवेद- आयुर्वेद (मैडिकल साइंस और इस विषय से सम्बन्धित ज्ञान)।

सामवेद का उपवेद- गन्धर्ववेद (संगीत, नाट्य, अभिव्यक्ति तथा अन्य कलाएं।)

अथर्ववेद का उपवेद- धनुर्वेद (राज्य रक्षा, शस्त्रादि का ज्ञान।)

इसी ज्ञान को और अधिक स्पष्ट करने के लिए 'दर्शन ग्रन्थ' लिखे गए, जोकि 6 दर्शन हैं। 11 उपनिषदों की रचना, विषयों को और अधिक सरलता से समझाने के लिए की गई । मनुष्य, समाज में व्यवस्थित रूप से निर्बाध अपना जीवन संचालित कर सके उसके लिए मनुस्मृति आदि अन्य स्मृति ग्रन्थों का लेखन हुआ अर्थात् आदि संविधान इत्यादि की रचना हुई और पृथ्वी के प्रत्येक कोने में वेद ज्ञान और उपरोक्त ग्रन्थों के आधार पर ही सारी दुनिया 1 अरब 96 करोड़ वर्षो से निर्बाध रूप से संचालित होती रही। विशेष बात ये थी कि ऋषियों द्वारा रचित सभी उपरोक्त ग्रन्थों का मूल आधार 'वेद' ही रहा।

विश्व के प्राचीनतम इतिहास के सन्दर्भों को विशेष रूप से आर्यावर्त (भारत) के इतिहास को जानने से कुछ विशेष बातें और तथ्य सामने आते हैं जो हैरान कर देने वाले हैं, जिनको आज प्रत्येक भारतवासी को गहराई से और धैर्य से समझना चाहिए। यह एक ऐसा इतिहास है जिसे लम्बे काल तक छिपाया गया ताकि हमारा स्वाभिमान कभी न जाग सके। आइए, आज इनको गहराई से जानने का प्रयास करें-

मनुष्यों के समस्त समाज में को ऊंच-नीच नहीं थी। न अशिक्षा, न लैंगिक भेदभाव, न जातिगत भेदभाव, न कोई गरीबी, न भुखमरी, न बाढ़, न सूखा, न प्राकृतिक आपदाओं का इतिहास है और न ही बड़े युद्धों का, न मार-काट, सब मनुष्य समृद्धशाली और सुखमय, वैभवशाली जीवन का आनन्द लेते थे। ऋषि दयानन्द अपने प्रवचन में कहते हैं- **"उस समय आर्यावर्त्त में दरिद्रों के यहां भी विमान थे।" वैभव काल को बताने के लिए एक ही पंक्ति पर्याप्त लगती है, ध्यान से सोचकर देखें !**

'ज्ञान और योग्यता' के आधार पर मनुष्यों के चार वर्ण (चार वर्ग) निर्धारित किए गए थे। ज्ञान को सुरक्षित रखने और आगे प्रचारित करने तथा विधि अनुसार व्यवस्था देने हेतु ब्राह्मण वर्ण, मनुष्यों की सुरक्षा करने, राज व्यवस्था करने, न्याय करने हेतु क्षत्रिय वर्ण, व्यापार करने तथा उद्योग आदि से राज्य को आगे बढ़ाने वाला वैश्य वर्ण और इन सभी वर्गों को अपने कार्य में सहयोग देने वाला श्रमिक वर्ग (जिसको - शूद्र कहा गया) ये कोई नीचा वर्ण नहीं था वस्तुतः जो समान अवसर, समान शिक्षा मिलने के पश्चात् भी, काफी मेहनत करने के पश्चात् भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य बनने की योग्यता प्राप्त नहीं कर सका उसको इस वर्ण में रखा गया, ये भी पूर्ण सम्मानित वर्ण था। इस सारी व्यवस्था को इस प्रकार समझिए-

तत्कालीन गौरवकाल में आर्यावर्त में राजा वंशानुगत नही था, ब्राह्मण वर्ग द्वारा राज्य की उन्नति हेतु सोच-समझकर योग्यतानुसार 'राजा' का चयन होता था। वो चयनित राजा भी कभी अपने आपको राजा न मानकर राज्य का सेवक ही समझता था।

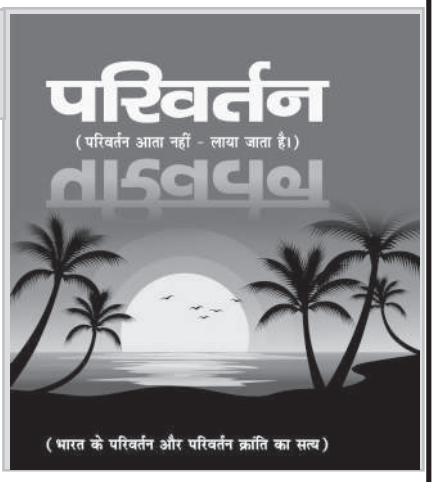

- क्रमशः

पुस्तक घर बैठे/ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
मो. 09540040339, 011-23360150

आर्यसमाज द्वारा संचालित सेवा प्रकल्प : सहयोग

दिल्ली की विभिन्न सेवा बस्तियों में लगातार जारी है वस्त्र वितरण के कार्यक्रम

सर्द-तेज हवाओं के बीच गर्म वस्त्र प्राप्त करके हर आयु वर्ग के लोगों को मिली राहत

दिल्ली स्थित रामचंद्र पार्क, प्रगति मैदान, सांगली मैस, प्रिंसेस पार्क, जय-जय कालोनी, मायापुरी, दयानंद विहार में बांटे गर्म वस्त्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतर्गत अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ की सेवा इकाई सहयोग पूरे भारत में गतिशील है। लेकिन भारत की राजधानी दिल्ली और एनसीआर क्षेत्र में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस योजना द्वारा अभावग्रस्त जय-जय कालोनियों में जो लोग, वस्त्र, जूते चप्पल, बच्चों के पढ़ने लिखने के लिए स्टेशनरी के सामान, खेलने के लिए खिलौने आदि मूलभूत जरूरतों से मोहताज हैं, उन्हें सामर्थ्यवान के लोगों पुराने लेकिन पहनने लायक कपड़े, जूते, चप्पल, स्टेशनरी, खिलौने आदि सामान, जिनका वे उपयोग नहीं करते उसे एकत्र करके, साफ, स्वच्छ करके, कपड़ों को प्रेस करके, पैक करके गरीब निर्धन लोगों में वितरित करने का कार्य निरंतर किया जा रहा है। यह सेवा अपने आप में बहुत सफल हो रही है, गरीब सेवा बस्तियों के लोग आर्य समाज से जुड़ रहे है, दुर्गुणों से बच रहे हैं, सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ योजना के अनुसार यज्ञ में आहुतियां दें रहे हैं।

यह सर्व विदित है कि अभावग्रस्त लोगों की मौसम की मार ज्यादा सताती है। घना कोहरा-तेज हवाएं और वस्त्रों की कमी होने के कारण लोग ज्यादा बीमार पड़ते हैं और सर्दी की इस पीड़ा से हर आयु वर्ग के लोग प्रभावित होते ही होते हैं। निर्धन-गरीब लोगों की इस पीड़ा को आर्य समाज हमेशा से अनुभव करता आया है और इस कष्ट को दूर करने के लिए लगातार सहयोग योजना के माध्यम से वस्त्र वितरण करके लोगों की सहायता की जाती है। अभी पिछले दिनों सहयोग की टीम ने रामचंद्र पार्क, प्रगति मैदान, सांगली मैस, प्रिंसेस पार्क, जय-जय कालोनी, मायापुरी, दयानंद विहार अदि कालोनियों में जा कर वस्त्र वितरण किया, जिससे बच्चे-युवा- बृद्ध और स्त्री, पुरुषों का सर्दी की मार से बचाव हुआ। सब लोगों ने आर्य समाज और महर्षि दयानंद सरस्वती जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त किया। उपरोक्त कार्यक्रमों में यज्ञों के आयोजन भी किए गए, जिनमें लोगों ने आहुति देकर पुण्य अर्जित भी किया।

यदि आपके क्षेत्र में भी ऐसे जरुरतमंद परिवार हैं और आप भी वस्त्र आदि बंटवाना चाहते हैं तो 9540050322 से सम्पर्क करें। – ***सन्नी भारद्वाज, संयोजक***

आर्य समाज की सभी चल रही योजनाओं प्रकल्पों, वेबसाइट, मोबाइल एप्लीकेशन, सोशल मिडिया हैंडल्स का उपयोग करने हेतु
8750-200-300
मिस्ड कॉल करें
SMS पर प्राप्त होने वाला लिंक खोलें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर जारी स्मृति डाक टिकट

आर्य संस्थाएं अधिक से अधिक खरीदकर करें प्रयोग

भारतीय डाक India Post

विशेष अनुरोध – सरकार द्वारा जारी किए जाने वाले स्मृति डाक टिकट सीमित संख्या में और एकमुश्त केवल बार ही प्रकाशित किए जाते हैं। अत: समस्त आर्यजनों, आर्यसमाजों, आर्य संगठनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं से निवेदन है कि अपने पास स्मृति रूप में डाक टिकट रखने तथा जन साधारण में प्रचार-प्रचार के लिए अधिकाधिक संख्या में खरीदकर प्रचार करें, अपने दैनिक पत्र-व्यवहार, स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड डाक आदि में प्रत्येक स्थान पर उपयोग करें, जिससे कि हजारों-लाखों आखों और हाथों से होते हुए यह प्रचारित हो और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जन्म वर्ष की स्मृति रूप में सुरक्षित रहे।

आप अपनी संस्था के लिए जितनी डाक टिकटें प्राप्त करना चाहते हैं, कृपया उसकी संख्या के अनुसार अपनी सहयोग राशि 5/- प्रति डाक टिकट की दर से निम्नांकित बैंक खाते में जमा करा दें या राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते भेजें।

DELHI ARYA PRATINIDHI SABHA

A/c No. : 2009257009039 IFSC :CNRB0002009 Canara Bank New Delhi

नोट – यह डाक टिकट ऑनलाइन भी प्राप्त की जा सकती है। सम्पूर्ण भारत में होम डिलीवरी सुविधा के लिए कोड स्कैन करें लॉग-इन करें अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें

vedicprakashan.com
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का ऑनलाइन स्टोर
96501 83336

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई का निर्वाचन सम्पन्न

श्री हरीश आर्य जी – प्रधान एवं श्री विजय कुमार गौतम जी – महामन्त्री बनें

आर्य प्रतिनिधि सभा मुंबई का द्विवार्षिक निर्वाचन (2024-25-26) चुनाव अधिकारी श्री मिठाईलाल सिंह जी की देखरेख में दिनांक 28.09.2024 को सम्पन्न हुआ, जिसमें श्री हरीश आर्य जी प्रधान, श्री विजय कुमार गौतम-महामन्त्री एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री वीरेन्द्र कुमार साहनी जी निर्वाचित घोषित किए गए। इसी के साथ अन्य पदाधिकारी एवं सदस्य निम्न प्रकार चुने गए-

प्रधान – श्री हरीश आर्य, **उप प्रधान** – सर्वश्री देशबंधु शर्मा, डॉ. जिले सिंह चौधरी, चंद्र कुमार सिंह। **महामन्त्री** –श्री विजय कुमार गौतम, **मन्त्री** – सर्वश्री दिलीप भाई वेलानी, हरिपाल सिंह, सुभाष सिंह। **कोषाध्यक्ष** – श्री वीरेन्द्र कुमार साहनी, **पुस्तकाध्यक्ष** – श्री भूपेश कुमार गुप्ता। **सदस्य** – सर्वश्री भीमजी रुपाणी, पं. धर्मवीर शास्त्री, महेश भाई वेलानी, श्रीमती सुमिता सुमन सिंह, विपिन भाई पटेल, अरूण कुमार अबरोल, वेद प्रकाश गर्ग, सुरेश यादव, रवि वर्मा, संदीप आर्य, आदित्य मूना, पं.नरेन्द्र शास्त्री, श्रीमती जयाबेन। **आमन्त्रित सदस्य** – राज कुमार गुप्त, तुलसीराम बांगिया – आमंत्रित सदस्य

श्री हरीश आर्य
प्रधान

श्री विजय कुमार गौतम
मन्त्री

श्री वीरेन्द्र कुमार साहनी
कोषाध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से समस्त नव निर्वाचित अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

दिल्ली सभा का प्रकल्प :
घर-घर यज्ञ- हर घर यज्ञ

योजना का हो रहा है बड़ा विस्तार : यज्ञ प्रशिक्षित महिलाओं द्वारा

दिल्ली की जय-जय कालोनियों में 550 से अधिक घरों में किया गया हवन प्रचार

यज्ञो वै श्रेष्ठतं कर्म की भावना और कामना को साकार करने के लिए संकल्पित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा घर घर यज्ञ, हर घर यज्ञ की योजना निरंतर विस्तार कर रही है। इस महत्वपूर्ण कल्याणकारी सेवा के प्रति लोगों की लोकप्रियता बढ रही है। इसके लिए सभा की एक युवा विद्वानों, कार्यकर्ताओं की पूरी टीम समर्पित भाव से निरन्तर इस सेवाकार्य में संलग्न है। जहां एक तरफ सभा के ये संवर्धक दिल्ली की कालोनियों में, शिक्षण संस्थानों में, घर परिवारों में यज्ञ करा रहे हैं वहीं उन जय-जय कालोनियों में वेदमन्त्रों का उच्चारण हो रहा है, हवन की सुगंध फैल रही है जहां बहुत से लोग जाने में भी परहेज करते हैं।

इससे भी आगे सभा द्वारा संचालित घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ के कल्याणकारी योजना के अर्न्तगत जय-जय कालोनियों की महिलाओं को विधिवत यज्ञ का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। परिणाम स्वरूप अब ये याज्ञिक महिलाएं घर-घर जाकर यज्ञ की ज्योति को प्रज्वलित कर रही हैं, वेद मंत्रों का उच्चारण कर रही हैं, स्वाहा- स्वाहा की ध्वनि गंजायमान हो रही है, यज्ञ प्रार्थना और भजनों के सामूहिक मधुर गायन से मानव निर्माण के कार्य को गति मिल रही है, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य समाज का संकल्प घर-घर यज्ञ, हर-घर यज्ञ का सपना साकार हो रहा है।

अभी पिछले महीने 1 से 30 दिसम्बर 2024 तक, जहांगीरपुरी- 115 घरों में हवन किय गये। कीर्तिनगर के 60 घरों में, आनन्द पर्वत ट्रान्सजैट कैम्प के 112 घरों में, जवाहर कैम्प 40 घरों में, मुकंदपुर के 75 घरों में, आदर्श नगर के 11 घरों में, स्वरूप नगर के 7 घरों में, साबदा के 95 घरों में, सुदर्शन पार्क के 1 घर में, चाणक्यपुरी के 1 घर में, भारोला के 1 घर में, चौधरी कालोनी के 1 घर में इत्यादि 525 घरों में प्रशिक्षित महिलाओं ने यज्ञ करने का कीर्तिमान स्थापित किया गया जोकि लगातार गतिशील है और आने वाले टाइम में हजारों घरों में यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की जायेगी।

आइए, सभा की इस कल्याणकारी योजना में सहभागी बनें, इन जय-जय कालोनियों में यज्ञ करना कराना पूरी तरह से परोपकार ही परोपकार है। इसमें घी, सामग्री, समिध, यज्ञपात्र, दरी, माइक और यज्ञ के ब्रह्मा आदि विद्वान, भजनोपदेशक की व्यवस्था में सहयोग देने हेतु अथवा यज्ञ के आयोजन हेतु सम्पर्क करें।

- बृहस्पति आर्य, संयोजक
9650183335

भारत के परिवर्तन की नींव रखने वाले ★ महर्षि दयानन्द के अमर वाक्य ★

पैसे का सदुपयोग किसमें?

गृहस्थ व्यक्तियों को धन के सदुपयोग करने का स्पष्ट निर्देश -

"सर्वदा सन्तानों की शिक्षा में धन का व्यय करे, किन्तु विवाह, मृत्यु आदि में न करे।"

- पत्र व्यवहार

आज के दिखावे के युग में कितना महत्वपूर्ण है ये। 13

गृहस्थी कभी निराश न हों

आजकल घर-घर में धन को लेकर वैर और क्लेश हो जाते हैं, लोग आत्म हत्याएं तक कर लेते हैं, गृहस्थ धर्म में कभी निराश न होने का महर्षि कितना सुन्दर संदेश दे रहे हैं-

"गृहस्थ लोग कभी प्रथम पुष्कल धनी होके पश्चात् दरिद्र हो जाएं, उससे अपने आत्मा का अवमान न करें कि 'हाय हम निर्धनी हो गए' इत्यादि विलाप न करें, किन्तु मृत्युपर्यन्त लक्ष्मी की उन्नति में पुरुषार्थ किया करें और लक्ष्मी को दुर्लभ न समझें।"

- संस्कार विधि

शब्दार्थ : प्रथम - पहले, पुष्कल पर्याप्त,
अवमान - कष्ट, विलाप - दु:खी होना 14

उपरोक्त वाक्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तक "भारत के परिवर्तन क्रांति की नींव रखने वाले महर्षि के अमर वाक्य" से साभार नियमित स्तम्भ के रूप में प्रस्तुत किए जा रहे हैं। इन वाक्यों को पढ़कर आप महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों, सिद्धान्तों और आर्यसमाज की मान्यताओं से परिचित हो सकते हैं तथा सोशल मीडिया पर प्रसारित करके परोपकार में सहभागी भी बन सकते हैं। पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें अथवा दिया गया कोड स्कैन करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
वैदिक प्रकाशन
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
सम्पर्क सूत्र : 9540040339

साप्ताहिक स्वाध्याय

थियोसॉफी से सम्बन्ध

गतांक से आगे-

22 मई सन् 1878 के पत्र में थियोसॉफी सोसाइटी रिकर्डिक के सेक्रेटरी अगस्टस गुस्टम लिखते हैं-

आर्यसमाज के मुखिया के नाम, आपको आदर पूर्वक सूचना दी जाती है कि 22 मई 1878 को न्यूयॉर्क में थियोसॉफिकल सोसाइटी की कौंसिल का जो अधिवेशन प्रेसीडेण्ट की अध्यक्षता में हुआ था, उसमें वाइस प्रेसीडेण्ट ए० विल्डर के प्रस्ताव और कारस्पांडिंग सेक्रेटरी एच०पीं० ब्लैवेट्स्की के अनुमोदन पर सर्वसम्मति से यह निश्चय किया गया कि सोसाइटी आर्यसमाज से मिल जाने के प्रस्ताव को स्वीकार करती है और यह भी स्वीकार करती है कि इस सोसाइटी का नाम 'दि थियोसॉफिकल सोसाइटी ऑफ दि आर्यसमाज ऑफ इण्डिया' रख दिया जाय।

निश्चय हुआ कि थियोसॉफिकल सोसाइटी अपने और यूरोप तथा अमेरिका में विद्यमान अपनी शाखाओं के लिए आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती को नियमानुसार पथदर्शक या मुखिया अंगीकार करे।

इस प्रकार थियोसॉफिकल सोसाइटी ने आर्यसमाज से उस समय सम्बन्ध स्थापित किया, जिस समय अमेरिका के निवासी सोसाइटी के संचालकों को यह पता नहीं था कि कल का भोजन कहां से मिलेगा। वहां वे खूब बदनाम और तंग थे। पूर्वांकित पत्रों से स्पष्ट होता है कि उस समय सोसाइटी के नेता महर्षि जी को गुरु मानने में अपना सौभाग्य समझते थे, और सब तरह से आर्यसमाज की संस्था में आने को तैयार थे। अन्त में बहुत-से पत्र-व्यवहार के बाद, थियोसॉफिस्ट-युगल 1879 के जनवरी मास में बम्बई पहुंच गया, और जिसे गुरु माना था, उसके चरणों में भेंट रखने की उत्सुकता प्रकट करने लगा।

पहले पहल यह युगल महर्षि जी से सहारनपुर में मिला। इसके बाद कई स्थानों पर महर्षि जी के साथ यह युगल घूमता रहा। महर्षि जी के शिष्य इन अपने को आर्यसमाजी कहने वाले थियोसॉफिस्टों के व्याख्यान करवाने लगे, और उनका आदर-सत्कार करने लगे। लगभग एक साल तक यही प्रेम-सम्बन्ध स्थापित रहा और थियोसॉफिस्टों की भक्ति उमड़ती रही। इतना समय भारत में पांव जमाने और बहुत-से शिष्य इकट्ठे करने के लिए पर्याप्त था। अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतवासी उस युगल की बातों को सुनना पसन्द करने लगे। लगभग वर्षभर प्रेम-सम्बन्ध जारी रहने के पीछे नए रंग दिखाई देने लगे।

झगड़े के मुख्य कारण तीन हुए। भारतवर्ष में आकार थियोसॉफिस्ट-युगल को ज्ञात हुआ कि जिस व्यक्ति को वे गुरु बनाकर आए हैं, वह गुरु ही रहेगा, शिष्य नहीं बन सकता। युगल समझता था कि वह पं० दयानन्द को अपनी वृद्धि का साधन बना सकेगा, परन्तु उसे शीघ्र ज्ञात हुआ कि यह भारतीय पण्डित ऐसा भोला नहीं कि हथियार बन सके।

दूसरी ओर युगल ने देश कि भारतवर्ष में अज्ञान और श्रद्धा की मात्रा बहुत अधिक है। कोई भी आदमी आकर गुरु बनना चाहे तो सर्वथा निराश नहीं होगा, कुछ-न-कुछ शिष्य उसे मिल ही जाएंगे। ऐसी दशा में थियासॉफी के संस्थापकों ने यही उत्तम समझा कि अपनी दुकान अलग खड़ी की जाय। आने से पूर्व वे आर्य समाजी थे, आकर शीघ्र ही उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके सिद्धान्त आर्यसमाज की अपेक्षा बौद्धों के साथ अधिक मिलते हैं।

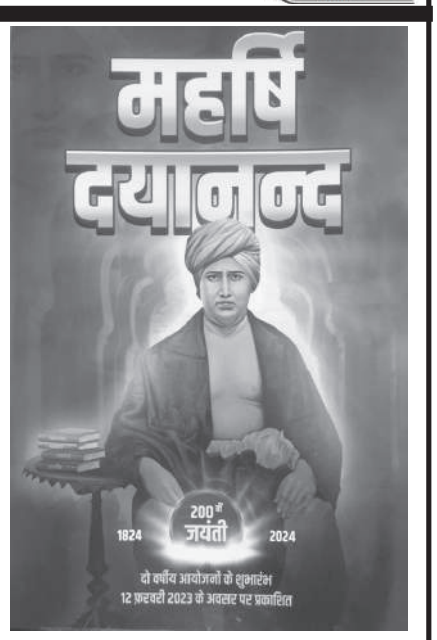

तीसरी शिकायत इन्हीं दो शिकायतों के परिणाम स्वरूप थी। थियोसॉफी सोसाइटी आर्यसमाज की शाखा थी। जो लोग थियोसॉफी के सभ्य थे, वे वस्तुतः आर्यसमाज के ही सभ्य समझे जा सकते थे। ऐसी दशा में यह सोचना भी असंगत था कि आर्यसमाज के सभासद् थियोसॉफी के सभासद् बनाए जायँ।

-क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200 वीं जयन्ती पर पुनः प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑन लाइन www.vedicprakashan.com अथवा 9540040339 पर आर्डर करें।

Continue From Last Issue

Relation with Theosophy

The work of the cashier was entrusted to a Millioner, which removed many concerns of the officers of the Society.

In 1877 Madame Blavatsky's famous book 'ISIS UNVEILED' was published. The book was unique in its kind. It supported ancient religions, was very critical of Christianity, and showed the possibility of magic and miracles. Scientists and philosophers looked at the book appallingly, and Christians were enraged, but the general public was struck by its uniqueness. People found the writing style of that book-writer amazing. It was hoped that the cost of time and labor would come out, but the destiny wanted something else. Some time after the publication of Pepe, Mr. Coleman also criticized, proving that there is nothing new in Madame's book, everything being quoted from about a hundred books.In those days, Mr. Hom's book named 'shadow of sprititualism' was published, in which attempt was made to expose the leaders Mr. Coleman's criticism and Mr. Hom's attacks made the position of the Theosophy leaders impossible. The Christians were already , the founder of Theosophy was in great trouble when they were exposed. Hitherto Colonel Alcott and Madame Blavatsky, were Chatpatjnanpages, and nothing else. They were neither a Hindu nor a Buddhist. Their condition worsened in America. It became impossible for them to live in that country. It so happened in 1877. Madame Blavatsky wrote a letter at that time, the following quote portrays the writer's state of mind, explains what prompted the couple to go to India and what lies beneath Colonel Alcott's letter to Rishi Dayanand in 1878 Madam writes in the letter-

"It is for this that am going forever to India, and for very shame and vexation, I want to go where no one will know my name. Home's malignity has ruined me forever in Europe.[1]

''I am going to India because as i am fed up with shame and irritation. I want to go to a place where no one even knows my name. Home's malice has destroyed me forever in Europe.''

Thus being dishonored and defamed in America and Europe, the founders of Theosophy decided to uplift the innocent inhabitants of India. After reading this introduction, the readers will be able to understand why the leaders of Theosophy wrote such humble letters to Rishi Dayanand. They had become absolutely infamous in America and Europe. It was impossible for them to stay there. The only way to gain a foothold in India was to take shelter of a powerful person. Colonel Alcott had got the introduction of the sage from Shri Harishchandra Chintamani. Taking advantage of that introduction, the President of Theosophy started writing submissive letters to Rishi Dayanand.

The extracts from Madam's letters are taken 'Modern Religions Movments n India'. The letter given at the beginning of this paragraph was followed by letters from Harishchandra Chintamani to Swamiji on behalf of Theosophy. Colonel Alcott writes in a letter dated May 21-

''When I give a hint that our societys should be declared branch of Arya Samaj under the guidance of Pandit Dayanand Saraswati and myself, then I feel proud to have considered a wise and pious man as my teacher and guide.

To be Continue............

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji. To buy online login WWW.vedicprakshan.com or contact - 9540040339

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में
सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अतः ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098

Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

प्रथम पृष्ठ का शेष

मानव समाज को सुदिशा प्रदान करता है- आर्य समाज वैदिक साहित्य

वाले भंवरे के भीतर इतनी शक्ति होती है कि वह कठोर बांस को काटकर बाहर निकल सकता है, लेकिन अपनी मोह तथा आसक्ति के कारण, केवल सपने देखने की वजह से काल का ग्रास बन गया। वैदिक साहित्य मनुष्य मात्र को यही सिखाता है कि हम अपने जीवन में अच्छे और सच्चे सपने देखें, जिनके अनुसार हम आगे बढ़ें और ऊंचे उठें, जीवन के लक्ष्य और उददेश्य को पहचानें और जो प्राप्त करने के लिए हम संसार में आए हैं उसे प्राप्त करें। इसलिए वैदिक साहित्य को पढ़कर अंधेरों से निकलकर प्रकाश तक पहुंचने का सपना देखिए, प्रकाश से लगातार प्रकाश की ओर बढ़ने का सपना देखिए, स्वयं प्रकाश प्राप्त करते हुए दूसरों के अंधेरे जीवन में रोशनी भरने का सपना देखिए, ऐसे सुंदर सपने देखना मनुष्य का आ जाए तो वह मंजिल तक अवश्य पहुंचेगा। आजकल समाज में यह अक्सर कहा-सुना जाता है कि आर्य समाज यह नहीं मानता और आर्य समाज वह नहीं मानता? आर्य समाज यह नहीं करता और आर्य समाज वो नहीं करता? आदि-आदि। किंतु आर्य समाज ही मानव समाज को भय-भ्रम के पार ले जा सकता है। मनुष्य मात्र को सुदिशा आर्य समाज ही दे सकता है।लेकिन इसके लिए जरूरी है कि हम आर्य समाज के वैदिक साहित्य को पढ़ें, सुनें, सोचें और जीवन में धारण करें।

आधुनिक परिवेश में मनुष्य जो चाहता है, वह उसे मिल नहीं पाता, जो मिलता है, उससे मनुष्य की कामनाओं का मेल नहीं खाता। फिर मनुष्य अपनी किस्मत को कोसता है, ईश्वरीय नियम, सिद्धांत और व्यवस्थाओं में दोष निकालता है, अपने रिश्ते-नातों के प्रति गुस्सा करता है। ऐसा मनुष्य भय-भ्रम का शिकार हो जाता है और दु:खमय जीवन जीता है। सब जगह कमियां निकालता है। मेरे साथी अच्छे नहीं हैं, मेरे परिवार वाले मेरा साथ नहीं देते, मेरी मजबूरी को कोई नहीं समझता। पता नहीं मेरी किस्मत में क्या लिखा है? क्या करूं, क्या न करूं? कुछ समझ नहीं आता। मनुष्य की मानसिकता, उसकी बुद्धि, विवेक शक्ति असंतुलित हो जाती है।

इसलिए आजकल दुनिया में कुछ लोग समाज की नब्ज देखते रहते हैं, समाज में क्या चल रहा है? लोग कैसी उलझनों में फंसे हुए हैं? कैसा सोचते हैं? कैसा बोलते हैं, कैसा करते हैं, वे लोग मीडिया के माध्यम से और अपने नए-नए तरीकों से समीक्षा करते रहते हैं। फिर उसी तरह की शब्दावली, उसी तरह का मीठा व्यवहार करके लोगों को अपने जाल में फसाते हैं, बहलाते हैं, फुसलाते हैं, डराते हैं, उनके मन में अपना झूठा अंधविश्वास जगाते हैं, फिर उनसे पैसा ठगते रहते हैं और भोले-भाले लोग अपनी विचारशीलता, कर्मशीलता को जंग लगाकर बैठ जाते हैं। वे स्वार्थी लोग उन सरल लोगों की दुखती रगों को छेड़ते हैं। उनसे पूछते हैं कि भाई, कुछ धर्म-कर्म भी करते हो? भगवान के मंदिर में जाते हो? व्यक्ति कहता है कि हर सप्ताह अमुक मंदिर में नियम से जाता हूं, फला भगवान को पूजता हूं। फिर स्वार्थी कहता है, अच्छा आप इस बार इस मंदिर में नहीं, इस भगवान को नहीं, उस दूसरे मंदिर को और दूसरे भगवान को ट्राई कीजिए, तुम्हें बहुत लाभ होगा। इस तरह स्वयं के कर्मो के फल से दुखी व्यक्ति जो पांच साल में, पच्चीस वर्षो का काम करके शीघ्रता से अमीर बनने का सपना देखता है, इधर से उधर दर-दर की ठोकरें खाता फिर रहा है और लोग उसे छल कर अपना गोरखे धंधा चला रहे हैं, मौज कर रहे हैं।

ईश्वर अपनी अमृत संतान को ऐडियां रगड़-रगडकर दर-दर की ठोकरें खाने के लिए संसार में नहीं भेजता। वह तो मनुष्य को असीम शक्तियों का खजाना प्रदान करता है। प्रत्येक मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, जितनी चाहे ऊंचाई प्राप्त कर सकता है। बस उसे जरूरत है अपनी सुप्त शक्तियों को जगाने की, सही दिशा में आगे बढ़ने की। प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह ईश्वर की अमृतवाणी वेद को पढ़े, वेदों पर आधारित आर्षग्रंथों, को मनुस्मृति को, उपनिषदों को, दर्शन शास्त्रों को, गीता-रामायण को, स्मृति ग्रंथों को पढ़े, इन सब ग्रंथों पर आधारित सरल भाषा में वैदिक साहित्य को पढ़े अथवा सुने, उस पर पूरा सोच-विचार करे, उसे समझे, कसोटी पर रखे और जब मन-बुद्धि और विवेक स्वीकार करें, तभी उस पर अमल करे।

आर्य समाज के वैदिक नियम-सिद्धांत कठिन तो हो सकते हैं। लेकिन इस कठिन राह पर चलने से ही जीवन का मार्ग सरल हो पाएगा। आर्य समाज को लेकर लोगों के मन में अनेक तरह की भ्रांतियां व्याप्त हैं। आर्य समाज ये नहीं मानता, आर्य स

वैदिक साहित्य हमें यह सिखाता है कि किसी के चमत्कार, किसीके बहुत बड़े विज्ञापन, किसी के नाटकों से कभी भी प्रभावित मत होइए। आपका मन, बुद्धि और आपका हृदय जब जिस बात को गवाही दे, तभी किसी बात को स्वीकार करिए, इसलिए भी प्रभावित नहीं होना कि किसी के पास में बहुत भीड़ आ रही है। इतने सारे लोग जा रहे हैं तो जरूर कोई बात होगी, यह बात कभी मत सोचना, क्योंकि आज का युग विज्ञापन का युग है, लोग नाटक और ड्रामा बहुत भारी करते हैं। आजकल वे लोग जिनको पहले से ही यह सिखाया जाता है कि खड़े होकर यह कहिए कि हमारे जीवन में यह चमत्कार हो गया, हमें यह लाभ हो गया, बीस-बीस आदमी एक साथ खड़े होकर घोषणा करते हैं, अमुक जगह चमत्कार हो गया और वही बीस आदमी हर जगह जाएंगे, चमत्कार की घोषणा करने के लिए। भोली जनता सच्चाई को नहीं समझ पाती। इसलिए सबसे पहले यह बात ध्यान रखना कि धर्म के नाम पर कोई भी किसी तरह का ड्रामा करता हो उसको देखकर प्रभावित नहीं होना।

सबसे पहले यह निश्चय करना कि जो कहा जा रहा है, वह आपके हृदय के अनुकूल है। दूसरी बात व्यवहारिक जगत् में, व्यवहार के पक्ष में वे बातें ठीक हैं। तीसरी बात सोचना वेदादि-शास्त्रों से सम्मत है, चौथी बात सोचना विज्ञान सम्मत है या नहीं, या केवल अंधविश्वास तो नहीं है। सारी बातों का निश्चय करने के बाद एकांत में बैठकर चिंतन करिए और जब आपको लगे कि कहीं सही जगह आप आ गए हैं, तो फिर अपने मन को वहां से हिलने नहीं देना, अगर आपको यह एहसास हो जाए कि आप सही जगह पहुंच गए हैं तो फिर एक ही स्थान पर खोदते चले जाना, खोदते चले जाना पानी जरूर मिल जाएगा और अगर दस जगह आपने गड्ढा खोदना शुरू कर दिया तो पानी भी मिलने वाला नहीं है और आपकी शक्ति भी व्यर्थ हो जाएगी। अपने मन को एक जगह जरूर टिका लीजिए लेकिन यह बात ध्यान रखिए कि सत्य तक पहुंचने के लिए वैदिक साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करना पड़ेगा। - *सम्पादक*

पृष्ठ 2 का शेष

कल बच्चे वोक्स न बनें इसलिए हम पुस्तक मेला अवश्य जाएं

आज भारत में भी कॉमन टॉयलेट्स की मांग जोर पकड़ने लगी है। समलैंगिक विवाह भी अजूबे नहीं रह गए। पिछले वर्ष एक लड़की ने स्वयं से शादी कर ली। ब्रेकअप और तलाक उत्सव की तरह मनाए जा रहे हैं। हिंदू त्योहारों ही नहीं, विवाह परंपराओं, रीति-रिवाजों पर भी उंगलियां उठाई जा रही हैं। आलिया भट्ट ने एक विज्ञापन में कन्यादान पर प्रश्न खड़े किए हैं। जेएनयू में कुछ वोक्स छात्र स्वयं को शिखंडी बताकर प्रसन्न हो रहे हैं। ये छात्र मूंछें रखते हैं और साड़ी पहनते हैं, बिंदी और लिपस्टिक भी लगाते हैं। चिंता की बात यह है कि हमारे कुछ मी लॉर्ड भी उनके समर्थक हैं। यानि वोकिज्म भारत के दरवाजे खटखटा रहा है। इसके लिए अभी जरूरी है कि हम इस अदृश्य दुश्मन को पहचानें। अपने बच्चों को वोक्स के लक्षण बताएं और अपनी संस्कृति पर गर्व करें। एक दुर्दांत वामपंथी मार्क्सवादी रणनीति जिसने पहले ही दुनिया भर के कई देशों के परिवारों, समाजों और संस्कृति को बर्बाद कर दिया है। जो 'वोकिज्म' हमारे त्योहारों को बर्बाद कर रहा है। लोग प्रचलित पद्धतियां भूलकर विदेशी तरीकों को अपना चुके हैं, अपने तीज-त्योहारों को भूलकर विदेशी त्योहार मना रहे हैं और समझ नहीं पा रहे हैं कि हम अपने ही हाथों अपनी संस्कृति को बर्बाद कर रहे हैं। अगर संस्कृति और परिवार बचाना है, तो इसका एक ही मार्ग है, वो है वैदिक ग्रंथ। ऐसा नहीं है कि सब लोग धर्म से विमुख हैं, बस यह सोचते हैं कि वेद पढ़ने से क्या हासिल होगा, सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से! ये सब पुरानी बातें हैं, आज आधुनिक जमाना है, ये सब चीजें कोई मायने नहीं रखती आदि-आदि सवालों से अपने मन को बहला लेते हैं। दूसरा, अक्सर बातों-बातों में यह सुना जाता है कि अब जमाना पहले जैसा नहीं रहा, न बच्चों में संस्कार बचे और न मर्यादा। पर कभी किसी ने सोचा है इसके जिम्मेदार कौन हैं? जरा सोचिए, जब हमें जमाना और संस्कार ठीक मिला था, जिसका हम अक्सर जिक्र करते हैं, तो उसका वर्तमान में स्वरूप क्यों बिगड़ा? कौन है उसका दोषी? दो-चार घंटे कीर्तन-जागरण कर या गाड़ी में दो भजन चला लेना धर्म है? नहीं, वो मनोरंजन हो सकता है, लेकिन धर्म नहीं!! प्रत्येक परिवार जिसमें 4 लोग हैं, औसतन हर महीने 500 या 700 रुपये का इंटरनेट डाटा इस्तेमाल कर लेते हैं। लेकिन जब अपने ग्रंथों का मामला आता है, तो हम बचत करते दिख जाते हैं।

ऐसा क्यों? जबकि सब जानते हैं कि इंटरनेट का प्रयोग एक बार बच्चे की मानसिकता धूमिल कर सकता है, किन्तु हमारा वैदिक साहित्य, जिसमें एक बार किया निवेश, उसे कभी पतन की ओर नहीं जाने देगा। वरन पीढ़ियों तक उसे बचत खाते की तरह परिवार को ब्याज में संस्कार देता रहेगा। यदि वो 10 मिनट भी अपने ग्रंथों, वेद, उपनिषद में देगा, तो उसके संस्कार जाग उठेंगे।

वादा कुछ नहीं करना, 1 से 9 फरवरी 2025 तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में विश्व पुस्तक मेला आयोजित हो रहा है, एक बार फिर आर्य समाज इस पुस्तक मेले में अपनी महान वैदिक सभ्यता का पहरेदार बनकर जाएगा। आप अपने बच्चों के साथ जरूर आंए यहाँ आपको वेद, सत्यार्थ प्रकाश, वैदिक पुस्तकें, इतिहास, भारत की संस्कृति को जानने-समझने के बहुत ग्रंथ आपको यहाँ मिलेंगे। जिनमें आपके बच्चों को उन सभी सवालों के जवाब मिलेंगे जो वोक्स उनसे पूछकर उन्हें नए-नए वोक्स बनाते हैं।समझिए, आपके आस-पास दाएं-बाएं वोक्स खड़े हैं, जो मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों को वोक्स बना रहे हैं। इनसे बचना है, तो वैदिक साहित्य ही एक मात्र इलाज है। -संपादक

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रिंटिंग प्रेस में तकनीकी खराबी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 12 वर्ष 48 दिनांक 13 से 19 जनवरी, 2025 प्रकाशित नहीं हो सके। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

8
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
सोमवार 20 जनवरी, 2025 से रविवार 26 जनवरी, 2025
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-24-25/01/2025 (वीर-शुक्र-शनिवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26
आर.एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 22, जनवरी, 2025

प्रतिष्ठा में,

ओ३म्

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

के निर्देशन में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के तत्वावधान में

आर्य परिवारों के विवाह योग्य युवक-युवतियों का परिचय सम्मेलन

रविवार, 9 फरवरी 2025, प्रातः 11 बजे से
स्थान : आर्य समाज देव नगर, करोलबाग, नई दिल्ली 05

अनिवार्य ऑनलाइन पंजीकरण

पंजीकरण करवाने की अंतिम तिथि 3 फरवरी 2025
तभी पुस्तिका में विवरण प्रकाशित होगा

bit.ly/parichay2024
अथवा
QR कोड स्कैन करें

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें : 9311721172

संयोजक

आर्य सतीश चड्ढा (राष्ट्रीय संयोजक), विभा आर्या (संयोजक), वीना आर्या (सहसंयोजक), रश्मि वर्मा (सहसंयोजक)

निवेदक

धर्मपाल आर्य (प्रधान), विनय आर्य (महामंत्री), विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष)

नोट : विधवा-विधुर, तलाकशुदा, विकलांग तथा 35 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के युवक युवतियों के लिए विशेष सुविधा

विश्वभर में आर्यसमाज की लहराती पताकाओं को दर्शाता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

वर्ष 2025 का कैलेण्डर प्रकाशित

आर्यसमाजें अधिकाधिक सख्या में अपने नाम से छपवाकर प्रचार करें

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 प्रतियों से अधिक के आर्डर पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

ऑनलाइन प्राप्त करने हेतु कोड स्कैन/लॉगइन करें
www.vedicprakashan.com

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष एवं तार्किक समीक्षा के लिए
उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षण मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

- प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹ 80, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 60
- विशेष संस्करण (सजिल्द) 23x36%16 — मुद्रित मूल्य ₹120, प्रचारार्थ मूल्य ₹80
- पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹80, प्रचारार्थ मूल्य ₹50
- विशिष्ट पॉकेट संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹150, प्रचारार्थ मूल्य ₹ 100
- स्थूलाक्षर (सजिल्द) 20x30%8 — मुद्रित मूल्य ₹200, प्रचारार्थ मूल्य ₹120
- उपहार संस्करण — मुद्रित मूल्य ₹1100, प्रचारार्थ मूल्य ₹750
- सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी अजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹250, प्रचारार्थ मूल्य ₹160
- सत्यार्थ प्रकाश अंग्रेजी सजिल्द — मुद्रित मूल्य ₹300, प्रचारार्थ मूल्य ₹200

प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं

कृपया एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द जी की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें..

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

JBM Group
Our milestones are touchstones

ENHANCING TECHNOLOGY
EMPOWERING PEOPLE
ENABLING INNOVATION

JBM Group stands committed towards creating value for all our stakeholders and consistently building sustainable business models via innovation and customer orientation programs, thereby creating stronger synergies for all our businesses.

Technology has been the bed rock and a key catalyst for our growth. Our persistence towards achieving excellence has transformed us and we have amalgamated our strengths and R&D acumen to make our products & services future-ready, through the power of People, Innovation and Technology.

JBM Group - Plot No.9, Institutional Area, Sector 44, Gurgaon – 122 002
91-124-4674500-550 | www.jbmgroup.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह